मटर के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका एकीकृत प्रबंधन

कृषि कुंभ (अप्रैल, 2023), खण्ड 02 भाग 11, पृष्ठ संख्या 71–72

मटर के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका एकीकृत प्रबंधन

[1]जतिन गोस्वामी, [1]दीपक कुमार गोचर, [1]कमल यादव, [1]कामनी, [2]डॉ. प्रदीप कुमार एवं [2]डॉ. अभिशेक चौधरी

[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी उत्तर प्रदेश, भारत।

[2]कीट विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विष्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)

Email Id: pradeepentomology@gmail.com

मटर एक फूल धारण करने वाला द्विबीजपत्री पौधा है। इसकी जड़ो में गांठे मिलती है इसकी पत्तियाँ संयुक्त होती है। इसकी फली लम्बी, चपटी एवं अनेक बीजों वाली होती है। मटर के एक बीज का वजन 0.1 से 0.35 ग्राम होता है। मटर का उत्पादन मध्यम ताप पर किया जाता है। भारत मे मटर 7.9 लाख हेक्टेयर भूमि में उगाई जाती है। वार्षिक उत्पादन 8.3 लाख टन एवं उत्पादकता 1029 Kg./हेक्टेयर है। मटर उगाने वाले प्रदेशों में उत्तर प्रदेश प्रमुख है, उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख हेक्टयर क्षेत्र में मटर उगाई जाती है। मटर में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, रेशा एवं विटामिन्स पाये जाते है। स्वाद एवं पैष्टिकता की दृष्टि से दलहनी फसलों में से मुख्य फसल है।

मटर में लगने वाले प्रमुख हानिकारक कीट :–

पर्ण सुरंगक कीट (लीफ माइनर) :–

इस कीट का प्रौढ़ मक्खी चमकीली, गहरे हरे रंग या काली होती है। इसका वक्ष काले रंग का होता है तथा किनारो पर पीले निशान होते है। इस कीट की आंखे बड़ी तथा उन्नत होती है। इसकी इल्लियां गोलाकार यंत्र द्वारा पत्तियों पर असंख्य छेद बनाती है। अधिक छेद होने के कारण छोटे पौधे मुरझाकर सुख जाते है। तथा बड़े पौधो की पत्तियॉ, सुख जाती है।

माहू (एफिड़) :–

ऐसे कीट छोटे–छोटे पीलापन लिए हुए हरे रंग के जूं की तरह दिखाई देती है। इस कीट की आंखे लाल होती है और इनका वयस्क कीट पंखदार एवं पंखरहित दोनो प्रकार के होते है। इनमें माहू कीट के शिशू एवं प्रौढ़ टहनियों, पत्तियों, शाखाओं एवं फलियों में समूह मे चिपके रहते है। कीट के प्रौढ़ व शिशु दोनो ही पौधों की पत्तियों, फूलों व टहनियों से रस चुंसने के कारण इनके फूल सुखने व मुरझाने लगते है।

मटर का फली भेदक कीट :–

इस कीट के प्रौढ़ हल्के भूरे, रंग के तथा अगले पंखो में एक – एक काला धब्बा रहता है। इस कीट की इल्ली फलियों में घुसकर दानों को खाती है जिस कारण फलियां खाने योग्य नही रहती है।

थ्रिप्स कीट (तैला कीट) :–

यह कीट देखने में काफी छोटे होते है इनके पंख झिल्लीदार होते है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों एवं फूलों से रस चूसते है। जिसके कारण पत्तियॉ जगह –

जगह पीली एवं धब्बेदार हो जाती है और क्षतिग्रस्त पौधो में फलियां कम लगती है।

नियन्त्रण के उपाय :–

- इस फसल को समय से बोना चाहिए उचित समय पर बोई गई फसल अक्टूबर–नवम्बर में इस कीट का प्रकोप कम होता है। और लीफ माईनर कीट का प्रकोप सूखी भूमि पर अधिक दिखाई देता है, अतः आवश्यकतानुसार समय पर पानी देना चाहिए।
- इस कीट के क्षतिग्रस्त पत्तियो व फलियो को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- फेरोमेन ट्रेप का प्रयोग 8–10 ट्रेप/हेक्टेयर लगाकर चना इल्ली के नर वयस्क पकड़े।
- परभक्षी मित्र कीट जैसे कॉक्सीनेला, सिरफिड आदि हानिकारक कीटों की अवस्थाओं को खाकर अपना जीवन निर्वाह करतें है। इसलिए इनका संरक्षण करना चाहिए।
- कार्बोरिल या फैनिट्रोथियॉन 5 प्रतिशत धूल का 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भूरकाव करे जिससे मटर के फली छेदक का नियंत्रण किया जा सकता है।
- मोनोक्रॉटोफॉस या डाईमिथोएट 0.03 प्रतिशत की दर से छिड़काव करके भी लीफ माईनर का नियंत्रण किया जा सकता है।